IGNOU

MHD-04

SOLVED MOST REPEATED QUESTIONS

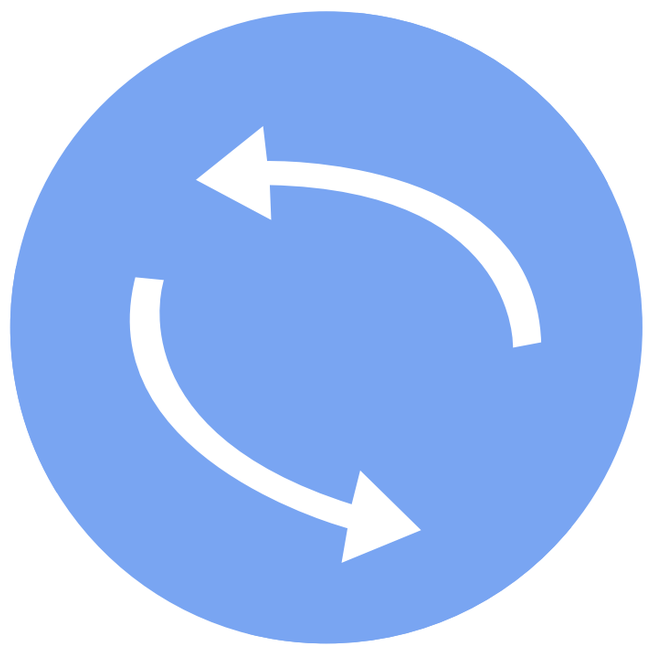

Curated List of 30 Questions that are seen to be repeated frequently in the examinations.

By **FarLearner.com**

1 . 'अंधेर नगरी' के महत्व पर प्रकाश डालिए।

Found in Dec 2021 (2) , Dec 2024 (2) , June 2022 (2)

FarLearner.com

भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा रचित 'अंधेर नगरी' हिंदी साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रहसन है, जो सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य प्रस्तुत करता है। यह नाटक केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि तत्कालीन शासन-व्यवस्था और समाज की अव्यवस्थाओं का सजीव चित्रण करता है। भारतेन्दु ने इस कृति के माध्यम से अराजक शासन, भ्रष्ट न्याय-प्रणाली और मूर्खतापूर्ण निर्णयों की आलोचना करते हुए जनचेतना जाग्रत करने का प्रयास किया है।

इस प्रहसन का प्रमुख महत्व इसकी व्यंग्यात्मक शैली में निहित है। 'अंधेर नगरी' में 'टके सेर भाजी, टके सेर खाजा' जैसे वाक्यांशों के माध्यम से बाजार की असंगत आर्थिक व्यवस्था को दर्शाया गया है, जहाँ वस्तुओं के मूल्य का कोई संतुलन नहीं है। यह केवल आर्थिक अव्यवस्था का संकेत नहीं, बल्कि पूरे राज्य की नीतिगत विफलता को उजागर करता है। इस प्रकार, लेखक ने हास्य और व्यंग्य के माध्यम से गंभीर समस्याओं को सरल और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

नाटक का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष इसकी राजनीतिक प्रासंगिकता है। 'चौपट राजा' का चरित्र उस शासक का प्रतीक है, जो अयोग्य, असंवेदनशील और निर्णय लेने में अक्षम है। उसकी न्याय-प्रणाली इतनी हास्यास्पद है कि अपराधी के बजाय निर्दोष को दंडित किया जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जब शासन व्यवस्था विवेकहीन हो जाती है, तब समाज में अराजकता और अन्याय फैलता है। इस दृष्टि से 'अंधेर नगरी' आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने समय में था।

FarLearner.com

सामाजिक दृष्टिकोण से भी यह नाटक अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार आम जनता भी लालच और अज्ञानता के कारण गलत परिस्थितियों का शिकार बनती है। गुरु और शिष्य के संवादों के माध्यम से नैतिक शिक्षा दी गई है कि व्यक्ति को विवेकपूर्ण निर्णय लेना चाहिए और प्रलोभनों से बचना चाहिए। यह शिक्षा आज के समाज में भी समान रूप से लागू होती है, जहाँ त्वरित लाभ के लालच में लोग अक्सर गलत रास्ता चुन लेते हैं।

FarLearner.com

अंततः, 'अंधेर नगरी' का महत्व इसकी सार्वकालिकता और सामाजिक जागरूकता में निहित है। यह नाटक न केवल अपने समय की समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि आज के समाज के लिए भी एक दर्पण का कार्य करता है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपनी तीक्ष्ण दृष्टि और प्रभावशाली लेखन के माध्यम से एक ऐसी कृति प्रस्तुत की है, जो पाठकों और दर्शकों को सोचने पर विवश करती है। In summary, 'अंधेर नगरी' हिंदी नाटक साहित्य में एक मील का पत्थर है, जो व्यंग्य, यथार्थ और शिक्षा का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है।

FarLearner.com

2 . 'स्कन्दगुप्त' नाटक में वर्णित स्कन्दगुप्त का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Found in Dec 2021 (3) , Dec 2020 (3) , Dec 2024 (10 क)

FarLearner.com

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'स्कन्दगुप्त' हिंदी नाटक साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है, जिसमें नायक स्कन्दगुप्त का चरित्र आदर्श, वीरता और राष्ट्रभक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। स्कन्दगुप्त गुप्त वंश का पराक्रमी सम्राट है, जो न केवल बाह्य आक्रमणों से अपने राज्य की रक्षा करता है, बल्कि आंतरिक संघर्षों से भी जूझता हुआ एक संतुलित और उच्च आदर्शों वाला व्यक्तित्व प्रदर्शित करता है।

स्कन्दगुप्त का सबसे प्रमुख गुण उसकी अद्वितीय वीरता और युद्ध-कौशल है। वह हूणों के आक्रमण से भारत की रक्षा करता है और अपने साहस तथा नेतृत्व से शत्रुओं को परास्त करता है। उसके भीतर अदम्य आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय है, जो उसे हर कठिन परिस्थिति में विजय दिलाता है। इस प्रकार, वह एक आदर्श वीर नायक के रूप में उभरता है, जो राष्ट्र की सुरक्षा को सर्वोपरि मानता है।

उसका चरित्र केवल युद्ध-वीरता तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें गहन राष्ट्रभक्ति और कर्तव्यपरायणता भी विद्यमान है। स्कन्दगुप्त अपने व्यक्तिगत सुखों और प्रेम-भावनाओं का त्याग करके राष्ट्रहित को प्राथमिकता देता है। देवसेना के प्रति उसका प्रेम होने के बावजूद वह अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होता। यह त्याग और समर्पण उसे एक उच्च आदर्शवादी नायक के रूप में स्थापित करता है, जो व्यक्तिगत इच्छाओं से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व निभाता है।

FarLearner.com

स्कन्दगुप्त का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष उसका मानवीय और संवेदनशील हृदय है। वह केवल कठोर योद्धा नहीं, बल्कि एक सहृदय और न्यायप्रिय शासक भी है। वह प्रजा के दुःख-दर्द को समझता है और उनके कल्याण के लिए प्रयासरत रहता है। उसके निर्णयों में न्याय और करुणा का संतुलन दिखाई देता है, जो उसे एक आदर्श शासक के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

FarLearner.com

नाटक में स्कन्दगुप्त का आंतरिक द्वंद्व भी प्रभावशाली रूप से चित्रित हुआ है। वह एक ओर प्रेम और व्यक्तिगत इच्छाओं के आकर्षण में है, तो दूसरी ओर राष्ट्र और कर्तव्य की पुकार उसे निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह द्वंद्व उसके चरित्र को अधिक यथार्थ और जीवंत बनाता है। अंततः वह अपने कर्तव्य को सर्वोपरि मानते हुए त्याग का मार्ग अपनाता है, जो उसके उच्च नैतिक आदर्शों को प्रकट करता है।

अंततः, स्कन्दगुप्त का चरित्र वीरता, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा और मानवता का समन्वित रूप है। जयशंकर प्रसाद ने उसे एक ऐसे नायक के रूप में प्रस्तुत किया है, जो न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि नैतिक और सामाजिक आदर्शों का भी प्रतिनिधित्व करता है। To conclude, स्कन्दगुप्त हिंदी नाट्य साहित्य में एक प्रेरणादायक और आदर्श चरित्र के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

FarLearner.com

3 . 'आधे-अधूरे' नाटक के आधार पर स्त्री-पुरुष संबंधों में आ रहे परिवर्तनों की समीक्षा कीजिए।

Found in Dec 2021 (4) , Dec 2024 (4) , Dec 2020 (5)

FarLearner.com

आधे-अधूरे, मोहन राकेश की एक प्रमुख नाट्य कृति है, जिसमें आधुनिक शहरी जीवन की विडंबनाओं और पारिवारिक संबंधों के टूटते स्वरूप को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक में स्त्री-पुरुष संबंधों के बदलते स्वरूप, तनाव, असंतोष और असुरक्षा की भावना का गहरा चित्रण मिलता है, जो आधुनिक समाज की वास्तविकताओं को उजागर करता है।

नाटक में सावित्री और महेन्द्रनाथ के संबंधों के माध्यम से दांपत्य जीवन की विफलता और असंतुलन को दिखाया गया है। महेन्द्रनाथ एक कमजोर, अस्थिर और असफल पुरुष के रूप में प्रस्तुत है, जो अपने परिवार की अपेक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ है। इसके विपरीत, सावित्री एक आत्मनिर्भर, सक्रिय और संघर्षशील स्त्री है, जो परिवार की जिम्मेदारियाँ संभालती है। इस असमानता के कारण उनके संबंधों में तनाव और [illegible] मिकाओं में बदलाव आने से संबंधों में नई जटिलताएँ पैदा हो रही हैं।

Get Solutions of All Repeated Questions

स्त्री-पुरुष संबंधों में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण पहलू सावित्री के अन्य पुरुषों के साथ संबंधों में भी दिखाई देता है। वह अपने पति से असंतुष्ट होकर अ[illegible] ी है, किंतु हर बार [illegible] आधुनिक संबंधों में स्[illegible] अपने-अपने स्तर पर अपूर्ण और असफल हैं,

CLICK HERE

4 . 'अंधायुग' में वर्णित पौराणिक आख्यान के आधुनिक संदर्भ का विवेचन कीजिए।

Found in Dec 2021 (5) , Dec 2024 (5) , June 2022 (5)

FarLearner.com

अंधायुग, धर्मवीर भारती की एक अत्यंत महत्वपूर्ण नाट्य कृति है, जो महाभारत के युद्धोत्तर काल की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस नाटक में पौराणिक आख्यान के माध्यम से आधुनिक युग की त्रासदी, नैतिक पतन और मानवीय संकटों को गहन रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने प्राचीन कथा को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर उसे सार्वकालिक और प्रासंगिक बना दिया है।

नाटक की कथा महाभारत युद्ध के अंतिम चरण के बाद की है, जब समस्त कुरुक्षेत्र विनाश और शोक में डूबा हुआ है। इस पौराणिक परिदृश्य के माध्यम से लेखक ने द्वितीय विश्वयुद्ध और उसके बाद की स्थिति का प्रतीकात्मक चित्रण किया है। युद्ध के परिणामस्वरूप उत्पन्न विनाश, निराशा और मानवता का पतन आधुनिक विश्व की वास्तविकता को प्रतिबिंबित करता है। इस प्रकार, 'अंधायुग' में पौराणिक कथा आधुनिक युग की वि[illegible]

Get Solutions of All
Repeated Questions

'अंधायुग [illegible] घटन में निहित है। नाटक में धृतराष्ट्र, गांधारी और अश्वत्थामा जैसे पात्र अपने-अपने स्तर पर नैतिक संकटों से जूझते हैं। धृतराष्ट्र की अंधी सत्ता-लिप्सा, गांधारी [illegible] क मनुष्य की मान[illegible] शोध की भावना प्रमु[illegible] देखी जा सकती है, जहाँ नैतिकता अक्सर स्वार्थ के सामने कमजोर पड़ जाती है।

CLICK HERE

5 . ‘कुटज’ निबंध की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Found in Dec 2021 (6) , Dec 2022 (5) , Dec 2020 (9 ख)

FarLearner.com

कुटज, हजारी प्रसाद द्विवेदी का एक प्रसिद्ध निबंध है, जो अपनी शैली, विषय-वस्तु और गहन दार्शनिक दृष्टि के कारण हिंदी गद्य साहित्य में विशेष स्थान रखता है। इस निबंध में कुटज वृक्ष के माध्यम से जीवन के गूढ़ सत्य, संघर्ष और आत्मबल की महत्ता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

इस निबंध की प्रमुख विशेषता इसका प्रतीकात्मक स्वरूप है। कुटज वृक्ष एक साधारण वनस्पति होते हुए भी लेखक के लिए एक गहरे जीवन-दर्शन का प्रतीक बन जाता है। यह वृक्ष विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रहता है और फलता-फूलता है, जिससे यह संदेश मिलता है कि मनुष्य को भी कठिनाइयों में धैर्य और साहस बनाए रखना चाहिए। इस प्रकार, द्विवेदी जी ने एक साधारण वस्तु के माध्यम से असाधारण विचारों को व्यक्त किया है।

Get Solutions of All Repeated Questions

‘कुटज’ निबंध की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता इसकी भावात्मक और विचारात[illegible] [illegible]थ्यों का वर्णन नहीं किया, बल्कि अपनी संवेदनाओं और अनुभूतियों को भी अत्यंत सजीव रूप में व्यक्त किया है। भाषा सरल, सरस और प्रवाहपूर्ण है, जिस[illegible] विद्यमान है। यह [illegible] है, बल्कि भावनात्मक [illegible]

CLICK HERE

6 . ‘किन्नर देश की ओर’ को ध्यान में रखते हुए राहुल सांकृत्यायन के यात्रा वृत्त की विशेषताएँ बताइए।

Found in Dec 2021 (7) , Dec 2022 (8) , June 2020 (8)

FarLearner.com

किन्नर देश की ओर, राहुल सांकृत्यायन हिंदी साहित्य में यात्रा-वृत्तांत की एक महत्वपूर्ण कृति है, जिसमें लेखक ने अपने हिमालयी प्रदेशों की यात्रा के अनुभवों को अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्धक शैली में प्रस्तुत किया है। इस कृति के आधार पर राहुल सांकृत्यायन के यात्रा-वृत्त की अनेक विशिष्ट विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं, जो उन्हें अन्य यात्रावृत्तकारों से अलग पहचान प्रदान करती हैं।

राहुल सांकृत्यायन के यात्रा-वृत्त की सबसे प्रमुख विशेषता उसका यथार्थवादी और प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित होना है। ‘किन्नर देश की ओर’ में उन्होंने जो कुछ देखा, अनुभव किया और जाना, उसे बिना किसी अतिशयोक्ति के सरल और सजीव भाषा में प्रस्तुत किया है। उनके वर्णनों में प्रामाणिकता और विश्वसनीयता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जिससे पाठक को ऐसा अनुभव होता है मानो वह स्वयं उस यात्रा का सहभागी हो।

Get Solutions of All Repeated Questions

दूसरी [illegible] और प्रवाहशीलता है। लेखक ने प्राकृतिक दृश्यों, पर्वतीय जीवन, नदियों, घाटियों और जनजीवन का अत्यंत आकर्षक चित्रण किया है। उनकी भाषा स[illegible] सौंदर्य के साथ-सा[illegible] का यात्रा-वृत्त न केवल [illegible] जनक भी बन जाता है।

CLICK HERE

7 . 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के संदर्भ में बच्चनजी की आत्मकथा का महत्व बताइए।

Found in Dec 2021 (8) , Dec 2020 (7)

FarLearner.com

क्या भूलूँ क्या याद करूँ, हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा का प्रथम भाग है, जिसमें लेखक ने अपने जीवन के प्रारंभिक चरणों का अत्यंत संवेदनशील और ईमानदार चित्रण किया है। यह कृति केवल एक व्यक्ति के जीवन का विवरण नहीं, बल्कि उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिवेश का भी सजीव दस्तावेज है। इस दृष्टि से इसकी महत्ता बहुआयामी है।

इस आत्मकथा का प्रमुख महत्व इसकी आत्मकथात्मक सत्यनिष्ठा में निहित है। बच्चनजी ने अपने जीवन के सुख-दुःख, संघर्ष, असफलताओं और सफलताओं को बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को अत्यंत स्पष्टता और ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है, जिससे पाठक उनके जीवन से गहरे स्तर पर जुड़ पाता है। यह सत्यनिष्ठा आत्मकथा को विश्वसनीय और प्रभावशाली बनाती है।

Get Solutions of All Repeated Questions

दूसरी मह… सौंदर्य है। बच्चनजी की भाषा काव्यात्मक, प्रवाहपूर्ण और अत्यंत संवेदनशील है। उनके वर्णनों में भावनाओं की गहराई और अभिव्यक्ति की सजीवता स्पष्ट रूप से … साधारण जीवन-… धारण कर लेती है, … है।

CLICK HERE

8 . जीवनी साहित्य की दृष्टि से 'कलम का सिपाही' का मूल्यांकन कीजिए।

Found in June 2024 (8) , Dec 2020 (8) , Dec 2022 (10 ग)

FarLearner.com

कलम का सिपाही, अमृत राय द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण जीवनी है, जिसमें मुंशी प्रेमचंद के जीवन, व्यक्तित्व और साहित्यिक योगदान का व्यापक एवं प्रामाणिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। जीवनी साहित्य की दृष्टि से यह कृति अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि इसमें तथ्यात्मकता, विश्लेषणात्मकता और साहित्यिकता का उत्कृष्ट समन्वय मिलता है।

इस जीवनी की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी प्रामाणिकता और तथ्यपरकता है। अमृत राय, जो स्वयं प्रेमचंद के पुत्र थे, ने इस कृति में अपने पिता के जीवन से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों, घटनाओं और प्रसंगों को विश्वसनीय स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया है। उन्होंने केवल बाहरी घटनाओं का वर्णन नहीं किया, बल्कि प्रेमचंद के आंतरिक जीवन, संघर्षों और विचारों को भी गहराई से उजागर किया है। इस प्रकार, यह

Get Solutions of All Repeated Questions

CLICK HERE

9 . **मोहन राकेश के नाट्य संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।**
Found in June 2024 (9) , Dec 2020 (5)

FarLearner.com

मोहन राकेश हिंदी नाटक के आधुनिक युग के प्रमुख हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने नाट्यकला को पारंपरिक रूढ़ियों से मुक्त कर यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक धरातल पर स्थापित किया। उनके नाट्य संबंधी विचारों में आधुनिक जीवन की जटिलताओं, व्यक्ति की आंतरिक विडंबनाओं और संबंधों की टूटन को विशेष महत्व प्राप्त है। उन्होंने नाटक को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर उसे जीवन की सच्चाइयों का सशक्त अभिव्यक्ति-पथ माना।

मोहन राकेश के नाट्य विचारों की सबसे प्रमुख विशेषता यथार्थवाद है। वे आदर्शवादी या कल्पनात्मक विषयों के बजाय जीवन की वास्तविक समस्याओं और संघर्षों को मंच पर प्रस्तुत करने के पक्षधर थे। उनके अनुसार, नाटक को समाज और व्यक्ति के वास्तविक अनुभवों का प्रतिबिंब होना चाहिए। इसीलिए उनके नाटकों में मध्यवर्गीय जीवन, पारिवारिक तनाव और व्यक्तिगत असंतोष का सजीव चित्रण मिलता है।

Get Solutions of All Repeated Questions

उनके नाट्य चिंतन में मनोवैज्ञानिक गहराई का विशेष स्थान है। वे पात्रों के बाहरी [illegible] संघर्ष और मानसिक स्थितियों को भी उभारते हैं। उनके अनुसार, नाटक की सफलता तभी संभव है जब पात्र जीवंत और स्वाभाविक हों। इस दृष्टि से उनके ना[illegible] जो उन्हें विशिष्ट ब[illegible]

CLICK HERE

10 . असंगत नाटक को परिभाषित करते हुए 'ताँबे के कीड़े' का विश्लेषण कीजिए।

Found in June 2024 (7) , Dec 2022 (4) , Dec 2024 (6)

FarLearner.com

असंगत नाटक (Absurd Drama) वह नाट्य-शैली है, जिसमें जीवन की निरर्थकता, अस्तित्व की विडंबना और मानव जीवन की असंगत परिस्थितियों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार के नाटकों में पारंपरिक कथानक, स्पष्ट उद्देश्य और तार्किक घटनाक्रम का अभाव होता है। पात्र अक्सर भ्रम, अकेलेपन और मानसिक द्वंद्व से ग्रस्त दिखाई देते हैं, तथा संवादों में भी अनिश्चितता और टूटन का अनुभव होता है। असंगत नाटक का उद्देश्य दर्शकों को जीवन की वास्तविकता के उस पक्ष से परिचित कराना है, जहाँ सब कुछ अर्थहीन और अनिश्चित प्रतीत होता है।

[redacted]

Get Solutions of All Repeated Questions

CLICK HERE